



शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

अंक- ६३ वर्ष-२०२६

माह जून



शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद



शिक्षण संवाद

वर्ष-२०२६
अंक-६३

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

माह- जून २०२६

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
अवनीन्द्र जादौन, प्रांजल सक्सेना

सम्पादक
आनन्द मिश्रा, सुश्री ज्योति कुमारी, बबलू सोनी

सह सम्पादक
सुशांत सक्सेना, शंखधर द्विवेदी,

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

तकनीकी सहयोगी
जितेन्द्र कुमार, अनिल मौर्य, विकास शर्मा

विशेष सहयोगी
विकास मिश्रा, अफ़ज़ाल अहमद, साकेत बिहारी शुक्ला

‘शिक्षण संवाद’ अप्रैल २०२६



**आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं**



व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं०

9458278429



ई मेल :

shikshansamvad@gmail.com



वेबसाइट :

www.missionshikshansamvad.com

‘शिक्षण संवाद’ अप्रैल 2026

शुभकामना सन्देश



मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि "मिशन शिक्षण संवाद" पत्रिका पिछले कई वर्षों से निरंतर प्रकाशित हो रही है और अब इसे मासिक रूप में जारी करने का निर्णय लिया गया है। यह कदम न केवल पत्रिका के निरंतर विकास को दर्शाता है, बल्कि शिक्षण समुदाय की बढ़ती आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को भी पूरा करता है।

यह पत्रिका शिक्षकों के नवाचारों, विद्यालय में चल रही रचनात्मक गतिविधियों तथा शैक्षिक प्रयोगों का सजीव दस्तावेज बनकर उभर रही है। साथ ही, विद्यार्थियों द्वारा किए जा रहे कार्यों, उनकी उपलब्धियों और समुदाय द्वारा दिए जा रहे सक्रिय सहयोग को साथ जोड़ने का सराहनीय प्रयास कर रही है।

उत्तर प्रदेश के साथ-साथ अन्य प्रदेशों के शिक्षकों के योगदान को प्रकाशित करना इसे और भी व्यापक एवं समावेशी बनाता है। मैं पत्रिका के संपादकीय मंडल को बधाई देता हूँ। पत्रिका की निरंतर सफलता, व्यापक पहुंच और उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ।

सादर

बिम्बसार बौद्ध

राज्य पुरस्कृत शिक्षक



‘शिक्षण संवाद’ जून 2026



प्रिय शिक्षक साथियो, शिक्षाविदो, अभिभावको एवं प्यारे विद्यार्थियो!

हम सभी जानते हैं कि जून केवल गर्मी और ग्रीष्मावकाश का महीना नहीं है। यह उस परिवर्तन की दस्तक है, जब तपती धरती वर्षा की प्रतीक्षा करती है और प्रकृति अपने नव-निर्माण की तैयारी में जुट जाती है। सूखी मिट्टी में जीवन की आहट होती है, बीज भीतर से जागने लगते हैं और बादलों के साथ एक नई उम्मीद आकार लेने लगती है।

प्रकृति का यही स्वभाव हमें शिक्षा का भी एक महत्वपूर्ण सूत्र देता है कि किसी का भविष्य अचानक नहीं बनता है, उसकी तैयारी हमें आज से करनी पड़ती है। हम बच्चों के भविष्य की चिंता करते हुए अक्सर उनकी पढ़ाई, परीक्षाओं और कैरियर की चर्चा करते हैं। लेकिन क्या हमारा दायित्व केवल इतना ही है? क्या आने वाली पीढ़ी को एक ऐसा समाज और पर्यावरण देना भी हमारी ज़िम्मेदारी नहीं होनी चाहिए, जिसमें वह सुरक्षित, स्वस्थ और संवेदनशील जीवन जी सके?

इसी प्रश्न को शिक्षा और समाज के बीच संवाद का विषय बनाने का प्रयास है मिशन शिक्षण संवाद का "प्रकृति मित्र अभियान"। इस अभियान का उद्देश्य केवल पौधे लगाना नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति ज़िम्मेदारी की संस्कृति विकसित करना है। जल संरक्षण, वृक्षों की देखभाल, जैव-विविधता की रक्षा, पशु-पक्षियों के प्रति संवेदना, स्वच्छता और पर्यावरण संतुलन जैसे विषयों को बच्चों के व्यवहार और विद्यालयी जीवन से जोड़ना इसके महत्वपूर्ण लक्ष्य हैं।

हमारा विश्वास है कि प्रत्येक विद्यालय एक ऐसा केन्द्र बन सकता है, जहाँ से प्रकृति के प्रति जागरूक नागरिक तैयार हो सकें। एक बच्चा यदि एक पौधे को केवल लगाता ही नहीं अपितु उसे बड़ा होते हुए देखता है, पानी की एक-एक बुँद का मूल्य समझता है, किसी प्यासे पक्षी के लिए पानी

रखता है, किसी जीव के प्रति करुणा दिखाता है तो वह केवल पर्यावरण नहीं बचा रहा होता है, वह अपने भीतर एक मनुष्य को भी विकसित कर रहा होता है।

हमारे प्रकृति मित्र अभियान का यही व्यापक अर्थ है कि 'प्रकृति की रक्षा के साथ संस्कारों की रक्षा और संस्कारों के माध्यम से मनुष्य के भविष्य की रक्षा।'।

"शिक्षण संवाद" इसी सोच का मंच है। यह केवल शैक्षणिक सामग्री प्रस्तुत करने वाली मासिक पत्रिका मात्र नहीं है, बल्कि शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक और समाज के बीच विचारों का सेतु बनने का प्रयास है। हमारा उद्देश्य है कि शिक्षा से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति तक ऐसे विचार, अनुभव और नव सृजन पहुँचें, जो कक्षा की सीमा से बाहर निकलकर जीवन और समाज को प्रभावित करें।

इस अंक में प्रस्तुत सामग्री को इसी सकारात्मक दृष्टिकोण से देखें तो आपको कहीं शिक्षण की नई राह मिलेगी, कहीं किसी शिक्षक का अनुभव प्रेरित करेगा, कहीं बच्चों की उपलब्धियाँ उत्साह देंगी और कहीं प्रकृति एवं समाज के प्रति हमारी ज़िम्मेदारियों पर विचार करने का अवसर मिलेगा।

आप इस अंक को केवल पढ़ें नहीं, इससे संवाद करें, विचार करें और जो अच्छा लगे उसे अपने विद्यालय, अपने बच्चों और अपने समाज तक पहुँचाएँ भी। क्योंकि "शिक्षण संवाद" की सार्थकता उसके पन्नों में नहीं, बल्कि उन विचारों में है जो पढ़े जाने के बाद व्यवहार में उतरते हैं।

आइए, जून की इस नई शुरुआत के साथ हम प्रकृति के नव-निर्माण से प्रेरणा लेकर शिक्षा, संस्कार और मानवीय मूल्यों से भारत के बेहतर भविष्य के नव-निर्माण में अपनी भूमिका निभाएँ। आपका यह अपना मासिक "शिक्षण संवाद" इसी यात्रा का एक छोटा-सा प्रयास है। पढ़िए, सोचिए, संवाद कीजिए और अपने अनुभव हमें भी साझा कीजिए।

स्नेह, विश्वास और शुभकामनाओं के साथ।

सादर

विमल कुमार (संपादक)

मिशन शिक्षण संवाद



अनुक्रमणिका

विषय वस्तु

पृष्ठ सं०

मिशन गीत	9
शिक्षक उपलब्धि	10-11
विचार शक्ति	12-14
प्रकृति मित्र	15-17
प्रकृति कविता	18
टी.एल.एम.संसार	19
बात महिला शिक्षकों की	20-21
सद विचार	22-23
प्रेरक—प्रसंग	24-25
कविता	26
नवाचार	27-28
खेल जगत	29-30
योग विशेष	31-32
बाल साहित्य	33
बच्चों का कोना	34

■ मिशन गीत



शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद
बढ़ाये ज्ञान का भण्डार
ज्ञान की जो लौ जलाए,
हर अँधेरे को मिटाए।
बिना स्वार्थ जो शिक्षा दे,
वह 'मिशन शिक्षण संवाद' कहलाए।।
न कोई लोभ, न कोई तन्त्र,
'सेवा' ही मिशन का है मूल मन्त्र।
बच्चों के सपनों को पंख लगाए,
जब शिक्षकों का सच्चा साथ मिलाए।।
गाँव—गाँव, शहर—शहर,
जहाँ भी हो अज्ञान की लहर।
वहाँ पहुँच जाए ये हर बार,
जैसे सूरज लाए नई भोर का उपहार।।
पढ़ाओ, बढ़ाओ, समझाओ प्यार से,
छू लो दिल हर एक उपकार से।
माँ—बाप भी अब जानें ये बात,
शिक्षा ही है जीवन की सौगात।।
मिशन नहीं ये सिर्फ नाम का,
संवाद है ये अच्छे काम का।
चलो जुड़ें हम सब इस राह से,
बदलें देश को ज्ञान के प्रकाश से।।



रचनाकार

प्रतिमा उमराव स०अ०

उच्च प्राथमिक विद्यालय अमौली (1-8)

विकास खण्ड— अमौली

जनपद— फतेहपुर



डायट कैंपस आगरा में आयोजित मंडल स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता में फिरोजाबाद के पीएम श्री स्कूल, सिविल लाइंस, दबरई की छात्रा **खुशी** ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस उल्लेखनीय उपलब्धि के बाद उनका चयन राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं के लिए कर लिया गया है।

खंड शिक्षा अधिकारी सुमित कुमार ने विजेता छात्रा को पदक प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण और सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में अपार प्रतिभा मौजूद है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि खुशी राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में भी अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए जनपद फिरोजाबाद का नाम गौरवान्वित करेंगी।

विद्यालय स्टाफ ने छात्रा को बधाई देते हुए इस उपलब्धि को अन्य छात्राओं के लिए प्रेरणास्रोत बताया। सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की यह सफलता इस बात का प्रमाण है कि उचित मार्गदर्शन और बेहतर अवसर मिलने पर वे प्रत्येक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं।

— मार्गदर्शक शिक्षक —

अफजाल अहमद

(सहायक अध्यापक)

पी एम श्री स्कूल सिविल लाइन
दबरई, फिरोजाबाद

सार-संक्षेप

मंडल स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता में फिरोजाबाद की छात्रा खशी का शानदार प्रदर्शन



अमर भास्कर, व्यूरो

[illegible][illegible]

अन्य अतिथियों ने कहा कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को यह सफलता इस बात का प्रमाण है कि उचित मार्गदर्शन और बेहतर अवसर मिलने पर वे प्रत्येक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं। उन्होंने शिक्षात्मक संस्थानों में उच्च संवर्षी आधारित सुविधाओं को और मजबूत बनाने की आवश्यकता को भी जोर दिया, ताकि राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर अधिक प्रगतिशाली खिलाड़ी सामने आ सकें।

डिजिटल लाइव

फिरोजाबाद

दंगल में फ़िरोजाबाद की खुशी का दम, मंडल स्तर पर बनीं चैंपियन

- आगरा में मंडल स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन
- पीएमश्री स्कूल सिविल लाइन्स दरई की छत्रा ने हासिल किया पहला स्थान
- राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए हुआ खुशी का चयन
- पदक देकर छात्रा को किया गया सम्मानित

सुरी राज्य स्वतंत्र प्रजातंत्रों में विरोधवाद का प्रतिनिधित्व करेगी। प्रजातंत्रों में सुरी ने अपने खेल कौशल और मजबूत प्रदर्शन से पहला स्थान हासिल किया। एकलव्य के बाद अर्जुन में रुई प्रजातंत्रों में सुप्रीम कुमार ने जहां को पटक देकर समाहित किया। उन्होंने कहा कि प्रजातंत्र और सरकारों के विकासों के विकासों में प्रतिभा को कोटों करो नहीं है। सरकार केवल उन्हें यही मंत्र और कौशल अर्जुन देने को है।

पौड़ीअर्द्ध गोराम मिश्र ने कहा कि खेलन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में अत्यन्त भूमिका निभाते हैं। खेलों में अनुशासन, आत्मविश्वास और

डिजिटल मार्केटिंग

आयरा/फिलोजेनवाद। अरस्तो के दमस्मय और अहमविश्वस्य के साथ फिलोजेनवाद को घेटी खुशी ने शकदो दर्शन कर लिले को आम बहदुता जिला शिक्षा एवं जिलाधन संयमन आयरा में आयोजित मंडल इतरीय कुशी जिलाधन में पीपल्लो स्कुल सिविल लक्षण एवम् की लक्षण ने बदल स्थापन इतरीय लक्षण। उधरके इस उपलब्धि ने विद्यार्थन और शिक्ष विद्यार्थ ने खुशी को लब्ध है। अ

सिद्ध

यन्त्रालयों को विद्यार्थियों के लिए राई का प्रयोग करता है।

विद्यार्थियों को अलग-अलग गण्ड, राष्ट्र, विदेशों का भी अध्ययन है। सरकार को और भी खेलों को प्रोत्साहन और राशिओं को मंत्र उपलब्ध कराना वृद्धि करने को सरकार के दिशा देने के साथ देश के गौरव को बढ़ाने की दिशा में मन्त्रालयों का कार्य है। राष्ट्रीय को समर्थन देकर विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणा देती है।



रीडिंग कैंपेन में ब्लॉक स्तर पर प्रथम स्थान



शिक्षण संवाद

छात्रा का नाम— रिया सरोज, कक्षा— 07

विद्यालय— कम्पोजिट विद्यालय ज्ञानपुर देहात, विकासखण्ड— ज्ञानपुर, जनपद— भदोही

प्रतियोगिता का नाम— ब्लॉक स्तरीय रीडिंग कैंपेन

आदरणीय जिलाधिकारी महोदय भदोही के निर्देशन में संचालित रीडिंग कैंपेन में कम्पोजिट विद्यालय ज्ञानपुर देहात की कक्षा 7 की प्रतिभाशाली छात्रा रिया सरोज ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए पूरे ब्लॉक स्तर पर चयनित होकर विद्यालय का नाम रोशन किया है।

15 अगस्त को आयोजित कार्यक्रम में रिया सरोज की प्रतिभा एवं पठन कौशल की सराहना की गई। उसकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि से विद्यालय परिवार, शिक्षकों, अभिभावकों एवं क्षेत्रवासियों में हर्ष का माहौल है। विद्यालय के शिक्षकों ने रिया की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह उसकी निरंतर मेहनत, लगन तथा पढ़ने के प्रति विशेष रुचि का परिणाम है। विद्यालय परिवार ने रिया सरोज को हार्दिक बधाई देते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

रिया की इस सफलता से विद्यालय के अन्य विद्यार्थियों को भी पठन-पाठन के प्रति प्रेरणा मिलेगी। कम्पोजिट विद्यालय ज्ञानपुर देहात परिवार ने इस उपलब्धि को विद्यालय के लिए गर्व का क्षण बताया है। "प्रतिभा को जब सही अवसर और मार्गदर्शन मिलता है, तो सफलता निश्चित रूप से कदम चूमती है।"



मार्गदर्शक शिक्षिका—

श्रीमती रेखा तिवारी

सहायक अध्यापक

कम्पोजिट विद्यालय ज्ञानपुर देहात
ज्ञानपुर— भदोही

अदृश्य ज़हर



शिक्षण संवाद

कुछ ही दिनों पूर्व की घटना है मेरे बेटे के स्कूल से फ़ोन आया और मुझे छुट्टी के समय बुलाया गया...टीचर और प्रिंसिपल से मुलाकात हुई, उन्होंने मुझसे कहा कि, मैं आपका बेटा शायद टीवी बहुत देखता है, मैंने पूछा.. 'बताइये तो कि, इसने किया क्या है?' उन्होंने हंस कर कहा कि, ये तो आपको विजित (मेरा पुत्र) ही बताएगा..आप इसी से पूछिए ...! '

जब मैंने उससे पूछा तो उसने बड़ी मासूमियत से जवाब दिया 'हाँ मम्मा! मैंने ये बात बोली थी..क्योंकि मुझे किसी लड़की को इम्प्रेस करना था..!'

मैं हैरान रह गयी कि यह क्या बोल रहा है ये ...? वहाँ उपस्थित सभी लोग हंस पड़े..! और उसकी प्रिंसिपल ने उसे थोड़ा स्ट्रिक्टली डाँट भी लगाई कि, 'ये तो ग़लत बात है विजित! अपने क्लासमेट के लिए इस तरह की बात नहीं बोली जाती, सब आपको बैड बॉय बोलेंगे..!' किन्तु विजित संतुष्ट नहीं था, वो खुद हैरान था कि उससे क्या गलती हुई है, जो मैं समझ रही थी.. ।

हालांकि बाद में सभी ने ये भी कहा कि ये टीवी का ही असर है पर मुझे टेंशन हो गयी बात ये थी कि मेरे 5 वर्षीय पुत्र ने अपने क्लास में पढ़ने वाली एक लड़की को यह कहा कि 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ, तुम मुझे प्यार क्यों नहीं करतीं?'

उस वक़्त तो मैं सामान्य दिखा रही थी खुद को, स्कूल से निकलते वक्त सबसे मिली । स्कूल स्टाफ़ ने हंसते हुए मुझे बताया कि आपका बेटा बड़ा हो गया है.. ' भले ही उस वक्त महज़ 5 वर्ष के बच्चे के मूँह से यह बात सुनकर लोग हंस पड़े, किन्तु यह हंसी हंसी की बात नहीं है, बल्कि चिंता का विषय है... मुझे यह आश्चर्य हुआ कि ये तो केवल कार्टून चैनल ही देखता है? फिर ये प्यार, लड़की को इम्प्रेस करना, ये सब बातें कहाँ से इसके दिमाग़ में आयीं? हम पति पत्नी भी इस मामले में सतर्क रहते हैं, टेबलेट मोबाइल या फिर लैपटॉप किसी भी चीज़ पर हम दोनों ही ये जरूर देखते रहते हैं कि, वो क्या देख और सीख रहा है, फिर चूक कहाँ हुई? ये बात थोड़ी ज़्यादा परेशान कर रही थी । ऊपर से इतनी छोटी उम्र में ये बात कहाँ से आ गयी दिमाग में ...?

मैंने इसका पूरा पता लगाने के लिए बेटे से प्यार से बातें पूछनी आरम्भ कीं..... कि उसने ये किससे सुना कि लड़कियों को इम्प्रेस करना होता है ? पहले तो वो डरा हुआ था । सोच रहा था स्कूल कंप्लेन से मैं उसे डाँटूंगी.. पर मैंने उसको आश्वस्त करते हुए बोला 'अगर आप सच सच बताओगे तो बिल्कुल भी डाँट नहीं पड़ेगी..'

अब उसने जो बताया वो वाकई हैरान कर देने वाला था.. उसने कहा 'मम्मी ये नोबिता

भी तो शिजूका को इम्प्रेस करता है' मैंने पूछा कि 'बेटा ये तो डोरेमॉन कार्टून के कैरेक्टर्स हैं?' उसने मासूमियत से कहा 'हां मम्मा'..

फिर बोला 'और बताऊँ न मम्मा' वो निंजा हथौड़ी में भी केनिची और यूमिको हैं.. उसमे ना ! केनिची और अमारा दोनों ही यूमिको को इम्प्रेस करने के लिए लड़ाई करते हैं..! केनिची यूमिको को प्यार करता है ...।'।

मैं हैरत से अपने 5 वर्षीय बेटे को असमय बड़ा होते देख रही थी...!! उसकी बात सुनकर मैंने उसे समझाते हुए कहा.. 'लेकिन बेटा वो सब तो कार्टून हैं, रियल नहीं हैं...और आप अपनी क्लास के बॉयज़ से बात करना। वरना आपकी टीचर आपको पनिशमेंट देंगी..।

उसने तर्क दिया.. 'पर मम्मा! सबकी फ्रेंड्स तो गर्ल हैं.. हथौड़ी की सोनम और डोरेमॉन की मीचौन, कृष्णा की राधिका और मिक्की की मिनी..! फिर मेरी क्यों नहीं..! 'अच्छा ठीक है फ्रेंड बनाओ बेटा लेकिन, ये मत बोलना कि, मैं तुमसे प्यार करता हूँ.. ये अच्छी बात नहीं..!' मैंने उसे समझाया..!

उस दिन के बाद से मैंने उन सब कार्टून के वीडियो देखे...और पाया कि वास्तव में वो बच्चों के योग्य नहीं हैं..! अपने बेटे के प्रोग्राम फ़ाइल में ये **nick, odion, sonic** , और **disney chanal** ब्लॉक किये ..दरअसल ये सभी चाइना और अमेरिकन चैनल हैं जिसमें दिखाई जा रही सामग्री वाकई बच्चों के मानसिक विकास पर दुष्प्रभाव डालती है..! और वही दूसरी ओर मोटू पतलू, डोरा, लिटिल आइंस्टीन और गड्डू बड्डू जैसे कार्टून अच्छे हैं। इन्हें दिखाएँ ..! मैंने कुछ और पोगो, कार्टून नेटवर्क और डिस्कवरी किड्स जैसे चैनल पर भी चेक किया कि आखिर उसमें क्या दिखाया जा रहा है?

आखिर इस प्रकार की सामग्री को छोटे बच्चों को परोसने का क्या उद्देश्य है ? क्या फन और मस्ती केवल लड़के लड़की के बीच ही हो सकती है? क्या तेनालीराम मोटू पतलू जैसे अच्छी मानसिकता वाले कार्टून प्रोग्राम के ही प्रसारण को ये लोग सिर्फ परमिशन नहीं दे सकते? आखिर सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय कर क्या रहा है? क्या यह कार्यक्रम और प्रसारित होने वाली सामग्री की अग्रिम पड़ताल का कोई क्राइटेरिया नहीं है? कहीं यह विदेशी चैनलों की रणनीति तो नहीं कि हमारे नौनिहालों की मानसिकता पर सीधा प्रहार करना चाहते हैं वह? उन्हें पथ से भ्रष्ट करना चाहते हैं? क्या कोई भी नीतियाँ नहीं है कि छोटे बच्चों को किस विषय वस्तु पर आधारित चीज़ें दिखाई जा रही हैं? आखिर हम अपने नौनिहालों को क्या सिखाना चाहते हैं? और भविष्य में उन्हें किस मार्ग पर ले जाना चाहते हैं... उनके मानसिक उत्थान में किस प्रकार की बातों का मिश्रण घोल करके उनकी मानसिकता को दूषित कर रहे हैं?

आजकल स्मार्टफोन पर रील्स देखने का जमाना है इन रील्स में अभद्र गानों और फूहड़ भाषा के साथ-साथ गंदे इशारों का भी प्रचलन आम है। ऐसे में बच्चों को स्मार्टफोन के

दुष्प्रभाव से बचा कर रखना माता-पिता के लिए एक बहुत बड़ा चैलेंज होता है। यह एक अदृश्य ज़हर है।

इस तरह के भ्रष्ट व्यवहार एवं आचरण से आने वाले नई पीढ़ी के बच्चे किस दशा को प्राप्त करेंगे ? इस घटना के बाद तो मेरी जैसे आँखें ही खुल गई। मैंने अपने बच्चे के भविष्य के संभावित ख़तरे को भाँप कर इस पर लगाम लगाने की शुरुआत कर दी है किंतु कब तक? जब तक वह छोटा है... और जब तक चीज़ें उसकी पहुँच में नहीं हैं..! किंतु क्या ऐसी सामग्रियों पर मैं उसके बड़ा होने पर भी रोक लगा सकूँगी? जब वह स्वयं से सारे चैनल अनब्लॉक करके देख लिया करेगा? क्या जवाबदेही है हमारी? क्या हमें इसके विरुद्ध आवाज़ नहीं उठानी चाहिए।

यह समस्या अति गंभीर है, यदि सोचा जाए तो... आजकल स्मार्टफ़ोन का दौर है जिसमें दिन भर बच्चे रील्स देखते हैं। अनिमे सीरीज देखते हैं और कोरियन ड्रामे भी और कुछ बच्चे तो छोटी उम्र में रील्स बनाकर अपना समय और भविष्य दोनों बर्बाद कर रहे हैं। हमारे आस पास ऐसे बहुत से बच्चे होंगे जिन्हें फोन देखने की बहुत बुरी लत लगी हुई है। बिना फोन देखे न वह लंच करते हैं न डिनर..यह स्थिति बहुत ही चिंताजनक है कि हमारी आने वाली पीढ़ी आज से ही मोटे-मोटे फ्रेम के चश्मे लगाए दिन भर फोन देखने में व्यस्त रहते हैं।

मेरी इस बात पर यदि आप सहमत हों तो इस पर अमल करने में देर न करें.. हमें विदेशी चैनलों की इस रणनीति को ध्वस्त करने के लिए स्वयं उनका बहिष्कार करना होगा... आज समय आ चुका है जागरुक होने का और अपने बच्चे की परवरिश में हर स्तर पर सोचना होगा कि हम उन्हें कैसा माहौल और किस प्रकार का परिवेश प्रदान कर रहे हैं। जिनमें एक स्वस्थ मस्तिष्क का और स्वस्थ मानसिकता का निर्माण हो सके। एक शिक्षक होने के नाते हमारा नैतिक दायित्व है कि हम बच्चों को परोसे जा रहे इस अदृश्य ज़हर की पड़ताल करें और अपने ज़िम्मेदार नागरिक होने के साथ-साथ एक ज़िम्मेदार शिक्षक होने का भी दायित्व निभा सकें।



कविता श्रीवास्तव
प्राथमिक विद्यालय पूरे दूलम
कुन्डा प्रतापगढ़



प्रकृति प्रेम से बदली विद्यालय की तस्वीर



शिक्षण संवाद

दो नीम के पेड़ों से सैकड़ों गौरैया तक प्रकृति प्रेम से बदली विद्यालय की तस्वीर। लगन, संघर्ष और सामुदायिक सहभागिता ने बदली विद्यालय की तस्वीर। यह है प्राथमिक विद्यालय ज्ञानपुर प्रताप सिंह, विकास खंड अजीतमल, जनपद औरैया (उत्तर प्रदेश)। 16 अगस्त 2015 का वह दिन आज भी स्मृतियों में ताज़ा है, जब मैंने प्रधानाध्यापक के रूप में प्राथमिक विद्यालय ज्ञानपुर प्रताप सिंह, विकास खंड अजीतमल, जनपद औरैया में कदम रखा। विद्यालय परिसर में उस समय केवल नीम के दो पेड़ थे। चारों ओर एक ऐसा खालीपन था, जिसे देखकर मन में एक संकल्प जन्मा, क्यों न इस विद्यालय को ऐसा हरा-भरा और सुंदर बनाया जाए, जहाँ बच्चों को किताबों के साथ प्रकृति भी पढ़ने को मिले।

वर्ष 2017 में मिशन शिक्षण संवाद से जुड़ने के बाद इस संकल्प को एक नई दिशा मिली। प्रकृति मित्र कार्यक्रम से प्रेरणा लेकर बच्चों के साथ विद्यालय में कुछ नया करने और विद्यालय को हरियाली से भरने की अलख जगी। पौधारोपण का कार्य शुरू हुआ, लेकिन राह आसान नहीं थी।

शुरुआत में विद्यालय में लगाए गए कई पौधों को कुछ अराजक तत्वों द्वारा उजाड़ दिये गए, और कुछ पुष्पीय पौधों को बच्चों ने भी उत्सुकतावश उखाड़ कर घर ले गए। पौधों की यह स्थिति देखकर मन दुखी हुआ, लेकिन हार मान लेना मेरे स्वभाव में नहीं था। मैंने ग्रामीणों, अभिभावकों और ग्राम प्रधान और बच्चों से संपर्क किया। सभी को विद्यालय को हरा-भरा बनाने के उद्देश्य से जोड़ा और पुनः नर्सरी से विभिन्न प्रकार के छायादार, फलदार एवं पुष्पीय पौधे लाकर उनका रोपण कराया।



धीरे-धीरे विद्यालय की तस्वीर बदलने लगी। सहयोग बढ़ता गया और पौधे भी बढ़ते गए। आज विद्यालय परिसर में बोगेनवेलिया, हरसिंगार, सावनी, सुंदर रूपा, लाल एवं सफेद गुलाब, गेंदा, गुलदाउदी, चांदनी, डबल चांदनी, मोगरा, मालती बेल और गुड़हल जैसे अनेक पुष्पीय पौधे अपनी सुंदरता बिखेर रहे हैं। फलदार पौधों में नींबू, मुसम्मी और अमरूद, जबकि छायादार पौधों में नीम, अशोक, कदम और बरगद विद्यालय की हरियाली को समृद्ध कर रहे हैं। औषधीय पौधों के रूप में पथरचट्टा, एलोवेरा, तुलसी और अन्य उपयोगी पौधों को भी विद्यालय परिसर में स्थान दिया गया है। वहीं विभिन्न प्रकार के हेज पौधों ने विद्यालय की सुंदरता को और निखार दिया है।

गौरैया की चहचहाहट बनी विद्यालय की पहचान

विद्यालय को प्रकृति मित्र बनाने की यात्रा केवल पौधों तक सीमित नहीं रही। परिसर में गौरैया संरक्षण को भी अभियान का हिस्सा बनाया गया। विद्यालय में गौरैयाओं के लिए दाना-पानी की नियमित व्यवस्था की गई तथा उनके सुरक्षित आशियाने के लिए सुंदर घोंसले बनाकर लगाए गए। आज विद्यालय परिसर में सैकड़ों गौरैयाओं की चहचहाहट वातावरण में ऐसा मधुर संगीत घोलती है, जो बच्चों के लिए प्रकृति की जीवंत पाठशाला बन गया है। घोंसलों में गौरैया अपने बच्चों के साथ सुरक्षित महसूस करती हैं। बच्चे उनके व्यवहार को देखते हैं, उनकी देखभाल करते हैं और उनसे जीव-जंतुओं के प्रति संवेदना तथा सह-अस्तित्व का पाठ सीखते हैं।

विद्यालय से जुड़ा पूरा समुदाय

इस परिवर्तन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि अब विद्यालय की हरियाली केवल विद्यालय परिवार की ज़िम्मेदारी नहीं रह गई है। शिक्षक, बच्चे, अभिभावक, ग्रामीण





और ग्राम प्रधान, सभी विद्यालय को अपना मानकर इसकी देखभाल करते हैं। यहां तक कि किसी त्योहार या विशेष अवसर पर विद्यालय के फूलों की आवश्यकता होने पर ग्रामीण पहले विद्यालय के शिक्षकों से अनुमति लेकर उनका उपयोग करते हैं। यह परिवर्तन केवल पौधों का नहीं, बल्कि विद्यालय और समुदाय के बीच बने आत्मीय संबंधों का प्रमाण है। विद्यालय में गठित इको क्लब के सदस्य भी नियमित रूप से पौधों की देखभाल, साफ-सफाई और पर्यावरण संरक्षण से जुड़े कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। बच्चों में पौधों और पक्षियों के प्रति ज़िम्मेदारी की भावना विकसित करने का यह एक प्रभावी माध्यम बन चुका है।

मिशन शिक्षण संवाद ने दिया संबल

प्रकृति मित्र कार्यक्रम के माध्यम से मिशन शिक्षण संवाद ने विद्यालय को यह सोच दी कि विद्यालय केवल पढ़ाई की चारदीवारी नहीं, बल्कि बच्चों के सर्वांगीण विकास और प्रकृति से जुड़ने का जीवंत केंद्र भी हो सकता है। दो नीम के पेड़ों से शुरू हुई यह यात्रा आज एक ऐसे विद्यालय तक पहुंच चुकी है, जहां हरियाली है, फूल हैं, फल हैं, औषधीय पौधे हैं, पक्षियों के लिए दाना-पानी है, घोंसले हैं और सबसे बढ़कर प्रकृति के प्रति संवेदनशील बच्चों की मुस्कान है।

इस यात्रा ने मुझे एक बात सिखाई है। “यदि मन में कुछ अच्छा करने का हौसला हो, कार्य के प्रति लगन और उमंग हो तथा समाज का सहयोग साथ मिल जाए, तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है।” आज प्राथमिक विद्यालय ज्ञानपुर प्रताप सिंह केवल एक विद्यालय नहीं, बल्कि प्रकृति, शिक्षा और सामुदायिक सहभागिता के सुंदर संगम का उदाहरण बन रहा है। यहां बच्चे पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ पौधों, फूलों और गौरैयाओं के बीच रहकर प्रकृति से प्रेम करना भी सीख रहे हैं। यही प्रकृति मित्र अभियान की सबसे बड़ी सफलता है। जब विद्यालय की हरियाली बच्चों के मन में भी हरियाली पैदा कर दे।



नरेंद्र सिंह कुशवाहा (प्र. अ)
प्रा. वि. ज्ञानपुर प्रताप सिंह
वि. ख.-अजीतमल
जनपद – औरैया (उत्तर प्रदेश)

प्रकृति मित्र अभियान पर कविता

शिक्षण संवाद

प्रकृति मित्र शिक्षक हम हैं

प्रकृति मित्र शिक्षक हम हैं, पर्यावरण बचाएँगे,
हरे-भरे इस धरती माँ को, और हरा बनाएँगे।

लाल रिबन बाँधा हमने, संकल्प लिया रखवाली का,
शिक्षक, विद्यार्थी मिलकर, रक्षा करेंगे हरियाली का,
ये पौधे हैं जीवन साथी, प्राण वायु हम सबको देते हैं,
प्रकृति मित्र अभियान को, जन-जन तक पहुंचाएँगे।
प्रकृति मित्र शिक्षक हम हैं

नन्ही चिड़ियों के खातिर, बहुत घोंसला बनाते हैं,
प्यासे पंछी को दाना-पानी, खिलाते और पिलाते हैं,
पौधों की हम सेवा करते, खाद और पानी देते हैं,
नए-नए पौधों को लगाकर, धरती को और सजाएँगे।
प्रकृति मित्र शिक्षक हम हैं

हम शिक्षक और बच्चे, प्रकृति के बन गए हैं मित्र,
स्वच्छता और हरियाली से, विद्यालय बन गए पवित्र,
आएं हम सब मिलकर, पेड़ लगाएं, जीवन बचाएं,
पर्यावरण संरक्षण का संकल्प, बार-बार दोहराएँगे।
प्रकृति मित्र शिक्षक हम हैं

पर्यावरण बचाएँगे। हरे भरे इस धरती माँ को, और हरा बनाएँगे।

मुकेश कुमार गोंड
(प्रभारी प्रधानाध्यापक)
पूर्व माध्यमिक विद्यालय देवरिया बाबू
शिक्षाक्षेत्र-रामकोला
जनपद कुशीनगर

प्रकृति मित्र शिक्षक हम हैं

लोक नृत्य



शिक्षण संवाद

प्रकरण— 'भारत के प्रमुख लोक नृत्य'

कक्षा— जूनियर स्तर

विषय— सामाजिक विषय

आवश्यक सामग्री— रंगीन पेपर, रंग, टेप, गोंद आदि।

उपयोगिता—

1. इस टी.एल.एम. के माध्यम से बच्चों में भारत के विभिन्न राज्य तथा उनके लोक नृत्यों की समझ विकसित होती है।
2. बच्चे राज्य विशेष के परिधानों से परिचित हो पाते हैं।
3. बच्चों द्वारा स्वयं निर्मित कराये जाने पर उनकी रचनात्मकता में वृद्धि होती है।
4. बच्चे विभिन्न राज्यों के नृत्यों के बीच तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं।



निर्माणकर्ता:—

श्रीमती वन्दना सिंह

कम्पोजिट विद्यालय बनसहिया

गौरी बाजार— देवरिया

महिला शिक्षक की डबल जिम्मेदारी



शिक्षण संवाद

“गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागो पाए
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताए”

एक ऐसा शिक्षक जो हमें पग पग पर ज्ञान देता है, गुरु ही तो सिखाता है भगवान कौन है? गोविंद कौन है? उगते सूरज के साथ ही एक शिक्षक का सिखाना शुरू हो जाता है, उगते सूरज के साथ वह शिक्षा देने का कार्य प्रारंभ कर देता है, पहले अपने घर पर अपने बच्चों को अपने कार्यों को, अपने संघर्षों को, अपनी जिम्मेदारियों को, जिसे यह पता है कि वह एक शिक्षक है, वह अपनी शिक्षा देने का कार्य परिवार से ही शुरू कर देता है, परिवार के सभी कार्यों को बहुत ही व्यवस्थित रूप से करने के बाद वह अपनी विद्यालय रूपी यात्रा पर निकल पड़ता है, यह सोचते हुए कि अभी असली शिक्षा हमारी बाकी है, जिसे हमें देना है। वास्तव में असली शिक्षा से मेरा पर्याय है वह शिक्षा जो देने के बाद हृदय को एक शांति मिलती है। एक सुकून मिलता है। एक आत्मविश्वास मिलता है कि आज मैंने जो कुछ भी जीवन में सीखा था, उसमें से कुछ अंश अपने कुछ शिष्यों में उड़ेल दिया है, “यह मेरे लिए गर्व का विषय है मैं एक शिक्षिका हूँ”। मेरी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि मुझे देश के उन नौनिहालों को तैयार करना है, जो हमारे देश का भविष्य हैं, उन्हें हमें अपने तन मन धन के साथ व्यवस्थित करना है, भले ही हमारे घर पर मेरे कुछ कार्य छूट जाएं, कुछ अव्यवस्थित रह जाए, घर के लोग हमसे यह कहें कि विद्यालय में और नौकरी के कारण घर की व्यवस्था तो हो नहीं पा रही है। कोई बात नहीं, वहां हमारा एक छोटा सा परिवार है, जहाँ हमारे दो बच्चे या चार बच्चे हैं, विद्यालय हमारा एक ऐसा परिवार है जहाँ हम 100 बच्चे 200 बच्चों को तैयार करते हैं। 200 परिवार को तैयार करते हैं, समाज को शिक्षित करते हैं और अपने देश के लिए उन नौनिहालों को तैयार करते हैं, जो महिला शिक्षक की ममतामयी छांव में, प्रसंचित मन से सीखते हैं। दुर्बल परिवेश के वे मासूम बच्चे



जिनके चेहरे हमारे विद्यालय पहुंचने भर से ही खिल उठते हैं आप सोचें कि हमारे पढ़ाने और सिखाने के बाद वह किस तरह आनंदमय हो उठते होंगे।

मेरा मानना है कि महिला शिक्षक छोटे बच्चों के लिए बेहतरीन शिक्षिका है, जिस तरह वह अपने बच्चों को अपने परिवार के लिए तैयार करती हैं, वैसे ही वह अपने उन विद्यालय के बच्चों को शिक्षित कर अपनी ममता की छांव में, अपने ममतामयी आंचल में, अपने संपूर्ण समर्पण के साथ, अपने मित्रवत व्यवहार के साथ, अपने संपूर्ण प्रेम के साथ, स्नेहपूर्ण व्यवहार के साथ, समस्त अनुशासन नैतिकता, संस्कारों के साथ बच्चों को जो ज्ञान महिला शिक्षकों से प्राप्त होता है वह वास्तव में अनमोल है। भले ही महिला शिक्षक अपने परिवार में अव्यवस्थित दिनचर्या के साथ रहती हैं, परिवार का सानिध्य पारिवारिक कार्यों में कम मिल पाता है, यद्यपि कोई घर बहुत रूढ़िवादी है, उनके घर में यही बातें होती हैं, कि बहू को घर संभालने वाला होना चाहिए। यह उसकी ज़िम्मेदारी है, कुछ फैमिली ऐसी होती हैं जो पूरा परिवार साथ में लगा हुआ होता है कि नहीं! हमारी बहू इतना अच्छा सामाजिक कार्य कर रही है, बच्चों में ज्ञान भर रही है, जो उसने ज्ञान पाया है वह ज्ञान बांट रही है। देखा जाए तो इतना बड़ा पुण्य कार्य कर रही है, पुरुष हालांकि दिनभर बाहर ड्यूटी करने के बाद घर में आराम करने लग जाते हैं, परंतु स्त्री नौकरी पेशा, शिक्षिका घर के बाद परिवार भी संभालती है, तो यह उसका बड़प्पन भी है, उसका सामर्थ्य भी है, और वह अपने कर्म, श्रम, सामर्थ्य, कर्तव्य निष्ठा से अपना परिवार और अपने विद्यालय का परिवार दोनों को संभाल सकती है, उदाहरण के लिए आप देखें – “सावित्री ने भगवान से अपने पति का प्राण बचा लिया। वह उसकी निष्ठा, प्रेम और कठिन तपस्या, धैर्य जो ईश्वर ने महिलाओं में अपार संख्या में दी है, तो क्या आज की महिला अपना परिवार और अपना ‘विद्यालय परिवार’ क्यों नहीं संभाल सकती? तमाम संघर्षों के बावजूद आज महिलाएं अपने दोनों परिवार बखूबी संभाल रही हैं और आगे भी संभाल सकेंगी।

उनसे पढ़ने के लिए शिष्य भी उत्सुक रहते हैं, प्रसन्नचित रहते हैं और अधिक से अधिक सीखते हैं, क्योंकि महिला शिक्षिका जो करुणा, समर्पण, प्रेम उन्हें अपनी मां के रूप में या उससे भी अधिक देखने को मिलता है संवादात्मक रूप में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने शिक्षक को राष्ट्र के निर्माण, भविष्य को आकार देने वाली शक्ति के रूप में देखा है। इसलिए महिला शिक्षिका की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वह शिक्षा संवेदना और सामाजिक मूल्यों का समावेश करके शिक्षा देती है, महिला शिक्षिका का व्यक्तित्व, जो केवल पाठ्यक्रम नहीं, बल्कि अपने ज्ञान, संवेदना, संस्कार और संघर्षों से एक पूरी पीढ़ी के व्यक्तित्व का निर्माण करती है।

फ़रहत माबूद (प्रधानाध्यापिका)

प्राथमिक विद्यालय तियरा भगवतपुर

प्रयागराज उत्तर प्रदेश



बंकिम चंद्र चटर्जी भारतीय साहित्य के महान साहित्यकार, उपन्यासकार और राष्ट्रभावना के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज में आत्मसम्मान, देशप्रेम, नैतिकता, कर्तव्य और जागरूकता की भावना को मज़बूत किया। उनके साहित्य में भारतीय संस्कृति, मानवीय मूल्यों और राष्ट्र के प्रति समर्पण की गहरी भावना दिखाई देती है। उनके विचारों ने भारतीय समाज को नई चेतना प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बंकिम चंद्र चटर्जी के विचार केवल साहित्य तक सीमित नहीं थे। उनके साहित्य में जीवन के अनेक महत्वपूर्ण मूल्यों का संदेश मिलता है। वे चाहते थे कि मनुष्य अपने व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर समाज और देश के प्रति अपने कर्तव्यों को समझे।

1. देशप्रेम की भावना –

बंकिम चंद्र के विचारों में राष्ट्रप्रेम का विशेष स्थान था। उनके लिए देश केवल भूमि का एक टुकड़ा नहीं, बल्कि उसकी संस्कृति, परंपरा, समाज और लोगों से जुड़ी एक जीवंत भावना था। उनकी रचनाओं ने लोगों में अपने देश के प्रति सम्मान और समर्पण की भावना जगाई। 'वंदे मातरम' के माध्यम से उन्होंने मातृभूमि के प्रति श्रद्धा और प्रेम की भावना को अभिव्यक्त किया। यह गीत स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना।



2. कर्तव्य और जिम्मेदारी—

उनकी रचनाएँ मनुष्य को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा देती हैं। उनका साहित्य यह संदेश देता है कि अधिकारों के साथ कर्तव्यों का पालन भी आवश्यक है। व्यक्ति को अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार होना चाहिए।

3. आत्मसम्मान और आत्मविश्वास—

बंकिम चंद्र भारतीयों में आत्मसम्मान और आत्मविश्वास की भावना जागृत करना चाहते थे। उनके साहित्य में यह संदेश मिलता है कि किसी भी समाज की प्रगति के

लिए उसके लोगों में अपनी संस्कृति और क्षमता के प्रति विश्वास होना आवश्यक है।

4. शिक्षा और जागरूकता—

बंकिम चंद्र के विचारों में ज्ञान और विवेक का महत्वपूर्ण स्थान था। शिक्षा केवल नौकरी प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्ति के विचारों को विकसित करने और उसे समाज के प्रति जागरूक बनाने का साधन है। शिक्षित और जागरूक नागरिक ही अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों को सही ढंग से समझ सकते हैं।

5. नैतिकता और चरित्र निर्माण—

उनके साहित्य में अच्छे चरित्र और नैतिक मूल्यों को विशेष महत्व दिया गया है। सत्य, साहस, आत्मसंयम, कर्तव्यनिष्ठा और त्याग जैसे गुण व्यक्ति के जीवन को श्रेष्ठ बनाते हैं। उनका साहित्य हमें कठिन परिस्थितियों में भी अपने सिद्धांतों पर कायम रहने की प्रेरणा देता है।

6. भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान—

बंकिम चंद्र चटर्जी भारतीय संस्कृति और परंपराओं के प्रति गहरा सम्मान रखते थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय इतिहास, संस्कृति और सामाजिक जीवन को स्थान दिया। वे भारतीयों में अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति गौरव की भावना विकसित करना चाहते थे।

7. बंकिम चंद्र के विचारों की प्रासंगिकता— बंकिम चंद्र चटर्जी के विचार अत्यंत उपयोगी हैं। विद्यार्थी उनके जीवन और साहित्य से मेहनत, अनुशासन, आत्मविश्वास, देशप्रेम और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा ले सकते हैं। उन्हें अपने अध्ययन के साथ समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनने का प्रयास करना चाहिए। वर्तमान समय में तकनीक और आधुनिक जीवनशैली के कारण युवाओं के सामने अनेक नई चुनौतियाँ हैं। ऐसे समय में बंकिम चंद्र का आत्मसम्मान, ज्ञान, नैतिकता और राष्ट्रप्रेम का संदेश युवाओं को सही दिशा प्रदान कर सकता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि बंकिम चंद्र चटर्जी भारतीय साहित्य और राष्ट्रवादी चेतना के महान व्यक्तित्व थे। उनके विचारों में देशप्रेम, आत्मसम्मान, कर्तव्य, नैतिकता, शिक्षा और सांस्कृतिक चेतना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। उनकी रचनाओं ने भारतीय समाज को जागरूक करने और राष्ट्रभावना को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका साहित्य आज भी हमें प्रेरणा देता है कि हम अपने जीवन में अच्छे विचारों को अपनाएँ, अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करें और देश तथा समाज के हित में सकारात्मक योगदान दें। वास्तव में, बंकिम चंद्र चटर्जी के सद्बिचार आज भी भारतीय युवाओं और विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा के उज्ज्वल स्रोत हैं।

डॉ. अंजू लता पटेल (स.अ.)

पी.एम.श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय करसड़ा

वि.ख.— मझवा, जनपद — मीरजापुर

बिरसा मुंडा



शिक्षण संवाद

भगवान बिरसा मुंडा का जीवन अदम्य साहस, उच्च नैतिक मूल्यों और अपनी मिट्टी के प्रति असीम समर्पण का अनुपम उदाहरण है। मात्र २५ वर्ष की अल्पायु में उन्होंने न केवल अंग्रेजी हुकूमत की दमनकारी नीतियों की नींव हिला दी, बल्कि अपने समाज को अंधविश्वास और कुरीतियों से निकालकर आत्मसम्मान से जीना सिखाया। जल, जंगल और जमीन की रक्षा के लिए उनका ऐतिहासिक 'उलगुलान' (महाक्रांति) और 'धरती आबा' के रूप में उनका लोक-कल्याणकारी जीवन आज भी हर भारतीय को राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा देता है। आपके जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंग निम्नलिखित हैं —

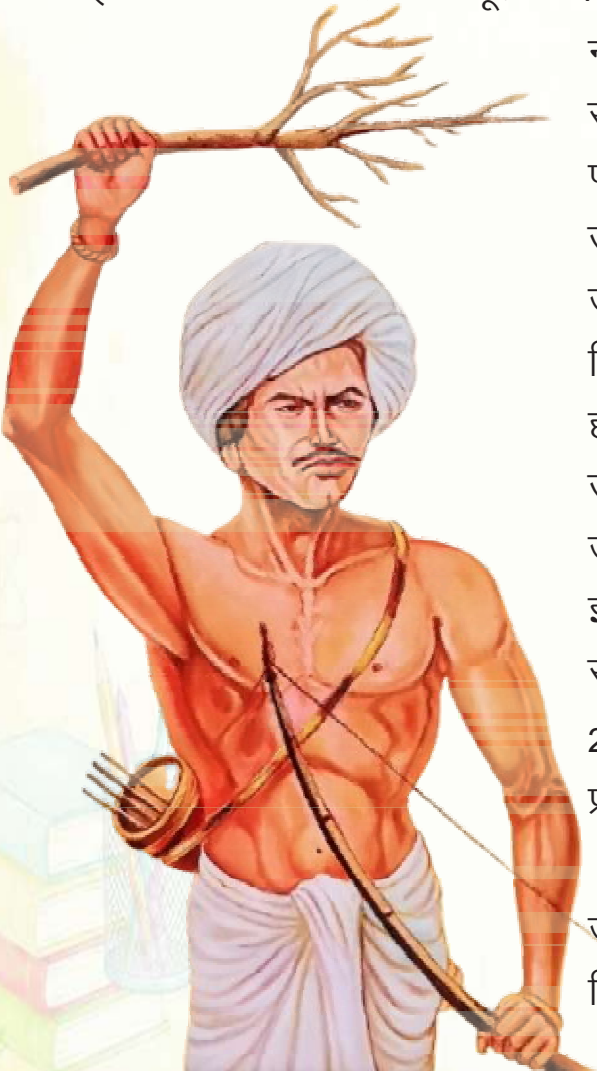
1. 'चाईबासा का प्रसंग' और आत्मसम्मान का बोध:—

बिरसा जी का बचपन गरीबी में बीता, लेकिन उनकी कुशाग्र बुद्धि को देखकर उन्हें चाईबासा के जर्मन मिशनरी स्कूल में दाखिला दिलाया गया। वहाँ दाखिले के लिए उनका

नाम बदल कर 'बिरसा डेविड' कर दिया गया। स्कूल में पढ़ाई के दौरान उन्होंने देखा कि अंग्रेज़ पादरी आदिवासी संस्कृति, रीति-रिवाजों और उनके मुंडा समाज को नीचा दिखाते थे। एक दिन जब एक शिक्षक ने मुंडा समाज पर अपमानजनक टिप्पणी की, तो किशोरावस्था के बिरसा ने निडर होकर क्लास में ही इसका कड़ा विरोध किया। उन्होंने कहा कि 'शिक्षा पाने के लिए हम अपनी जड़ों और आत्मसम्मान का सौदा नहीं कर सकते।' इस घटना के बाद उन्होंने स्कूल छोड़ दिया और स्वदेशी संस्कृति की पुनर्स्थापना में जुट गए।

2. 'धरती आबा' और आध्यात्मिक चेतना का प्रसार:—

1895 के आसपास बिरसा मुंडा ने प्राकृतिक जड़ी-बूटियों से लोगों का इलाज करना शुरू किया। वे केवल शारीरिक रोगों का ही इलाज नहीं



करते थे, बल्कि लोगों को मानसिक और सामाजिक रूप से जागरूक भी करते थे।

3. एकता का संदेश:— उन्होंने 'बिरसैत पंथ' की शुरुआत की, जिसने विभिन्न जनजातीय समूहों को एकजुट किया।

4. नैतिक जीवन:— उन्होंने शराबबंदी, पशुबलि पर रोक और सत्य-अहिंसा के मार्ग पर चलने का उपदेश दिया।

5. संसाधनों की सुरक्षा:— उन्होंने सिखाया कि जल, जंगल और जमीन भगवान की देन हैं, इस पर किसी विदेशी हुकूमत का एकाधिकार नहीं हो सकता।

6. डोम्बारी बुरु का ऐतिहासिक संग्राम (आदिवासी जलियांवाला बाग):—

जनवरी 1900 को 'डोम्बारी बुरु' की पहाड़ी पर बिरसा मुंडा एक विशाल जनसभा को संबोधित कर रहे थे। तभी ब्रिटिश सेना ने पहाड़ी को चारों तरफ से घेरकर अंधाधुंध गोलाबारी शुरू कर दी। इस दौरान बिरसा मुंडा के अनुयायियों ने तीर-कमान और पत्थरों से आधुनिक बंदूकों का सामना किया। सैकड़ों महिलाएं और पुरुष शहीद हो गए, लेकिन किसी ने सरेंडर नहीं किया। इस भयंकर नरसंहार के बावजूद बिरसा मुंडा अपने समर्थकों को बचाते हुए सुरक्षित निकल गए और अंग्रेजों के खिलाफ छापामार युद्ध जारी रखा।

8. पैसों के लालच पर भारी पड़ा निष्ठा का भाव:—

अंग्रेजी सरकार बिरसा मुंडा के प्रभाव से इतनी डर गई थी कि उन्हें ज़िंदा या मुर्दा पकड़ने के लिए ५०० रुपये का इनाम घोषित किया गया (जो उस समय एक बहुत बड़ी रकम थी)। जब बिरसा चक्रधरपुर के जंगलों में सो रहे थे, तो कुछ मुखबिरों ने लालच में आकर अंग्रेजों को सूचना दे दी और ३ फरवरी १९०० को उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। जेल जाने के बाद भी उनके चेहरे पर कोई डर नहीं था। उन्होंने जेलर से कहा था। 'तुम बिरसा को कैद कर सकते हो, लेकिन मुंडा समाज के दिलों में जल रही आज़ादी की आग को कैद नहीं कर सकते।'।

9. बिरसा मुंडा के जीवन का मूल संदेश:—

बिरसा मुंडा का 25 साल का जीवन यह सिखाता है कि अपनी संस्कृति की रक्षा करना, अन्याय के खिलाफ़ निडर होकर आवाज उठाना और समाज को अंधविश्वास से निकालकर सही दिशा दिखाना ही सच्चा धर्म है।

नरेन्द्र नाथ पटेल (स.अ.)

कम्पोजिट विद्यालय सुरहन,

भदोही, उत्तर प्रदेश



बच्चे का संकल्प

शिक्षण संवाद

मोहब्बतें बढ़ाएँगे, कदूरतें मिटाएँगे
सभी से अपनी दोस्ती, सभी के काम आएँगे
पड़े हैं गुफ़लतों में जो, उन्हें भी हम जगाएँगे
जला के शमा इल्म की, ये जुल्मतें मिटाएँगे
गुनाहों से बचेंगे हम, हाँ नेकियाँ बढ़ाएँगे
डरेंगे न किसी से हम, किसी को न डराएँगे
पुजारी हम हैं प्यार के, उसी के गीत गाएँगे
वतन से प्यार है हमें, वतन पे जाँ लुटाएँगे



लुबना वसीम

पी.एम.श्री स्कूल सिविल लाइन्स
फिरोज़ाबाद





मिट्टी के खिलौने

शिक्षण संवाद

गतिविधि:- 'मिट्टी से खिलौने बनाना मूर्ति कला कलाकृतियों का निर्माण करना' कक्षा- उच्च प्राथमिक व प्राथमिक स्तर

आवश्यक सामग्री— चीका मिट्टी व जल

गतिविधि करने की विधि / क्रियान्वयन—

सर्वप्रथम छात्र/छात्राओं द्वारा चीका मिट्टी को एकत्र किया गया व जल की सहायता से सभी बच्चों ने मिट्टी को अपने अनुसार आकार देकर विभिन्न प्रकार के बर्तन जैसे, गैस चूल्हा, सिलेंडर, कढ़ाई, गिलास, छोटी-छोटी कटोरियाँ, पेन स्टैंड आदि बनाए। कुछ छात्र/छात्राओं द्वारा भगवान शिव की शिवलिंग का भी निर्माण किया गया व उसकी पूजा भी की गई। जिससे मूर्ति कला का एक सुन्दर उदाहरण पेश हुआ वहीं दूसरी ओर छात्र/छात्राओं द्वारा मिट्टी के विभिन्न प्रकार के दिए भी बनाए।

लाभ—

1. इस गतिविधि को करने से सर्वप्रथम लाभ यह है कि सभी बच्चों का मिट्टी से जुड़ाव होता है।
2. बच्चों की कलात्मक क्षमता का विकास होता है।
3. बच्चों की कल्पनात्मक क्षमता का विकास होता है तथा बच्चे अपनी अपनी विभिन्न तार्किक क्षमता का प्रयोग करते हैं।
4. बच्चे अपनी मिट्टी से जुड़ी पहचान वह भारतीय संस्कृति व ग्रामीण परंपरा को जीवित रखते हैं।
5. बच्चे अपने ग्रामीण परिवेश के साथ-साथ सांस्कृतिक धार्मिक व सामाजिक आस्था से भी





गहरा जुड़ाव रखते हैं ।

6. यह गतिविधि पर्यावरण के अनुकूल होने के साथ-साथ मिट्टी से जुड़ी पहचान को जीवित रखती है ।

7. कुम्हार समाज को आजीविका प्रदान करती है

8. मूर्ति कला को बढ़ावा मिलता है ।

विशेष लाभ—

1. इस गतिविधि से सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह दिव्यांग छात्राओं को भी अपनी कलात्मक क्षमता का प्रदर्शन करने में मदद करती है ।

2. बच्चों की तार्किक क्षमता का विकास होता है ।

3. बच्चों में आत्मविश्वास की भावना जागृत होती है ।

4. कल्पना शक्ति का विकास होता है

5. बच्चों में एकता की शक्ति की भावना का विकसित होती है ।

6. दिव्यांग बच्चों को भय मुक्त वातावरण प्रदान करती है ।



—मार्गदर्शन—

नेहा हजेला (विज्ञान अध्यापिका)
पूर्व माध्यमिक विद्यालय गणेशपुर
नगर क्षेत्र मैनपुरी

बेसबॉल



शिक्षण संवाद

अमेरिका का राष्ट्रीय खेल – बेसबॉल

नियम, सावधानियाँ, उपकरण और लाभ—

अमेरिका का राष्ट्रीय खेल बेसबॉल माना जाता है। यह एक लोकप्रिय टीम खेल है, जिसे दो टीमों के बीच खेला जाता है। इस खेल में एक टीम बल्लेबाजी करती है और दूसरी टीम गेंदबाजी तथा क्षेत्ररक्षण करती है। बेसबॉल मनोरंजन के साथ-साथ शरीर को स्वस्थ और सक्रिय रखने में भी सहायक है।

खेल के नियम—

बेसबॉल में प्रत्येक टीम में सामान्यतः 9 खिलाड़ी होते हैं। बल्लेबाज़ बल्ले से गेंद को मारकर रन बनाने का प्रयास करता है। गेंद को मारने के बाद बल्लेबाज़ निर्धारित स्थानों की ओर दौड़ता है। बल्लेबाज़ी करने वाली टीम रन बनाने की कोशिश करती है, जबकि दूसरी टीम गेंद को पकड़कर और सही स्थान तक पहुँचाकर बल्लेबाज़ को आउट करने का प्रयास करती है। तीन स्ट्राइक होने पर बल्लेबाज़ आउट माना जाता है। खेल में टीम के प्रदर्शन के आधार पर अधिक रन बनाने वाली टीम विजेता होती है।

आवश्यक उपकरण—

इस खेल के लिए मुख्य रूप से बेसबॉल, बल्ला, दस्ताने, हेलमेट, बेस और खेल के जूते की आवश्यकता होती है। बल्लेबाज़ और कैचर के लिए सुरक्षा उपकरण भी उपयोग



किए जाते हैं। सही आकार और अच्छी गुणवत्ता के उपकरण खिलाड़ियों को चोट से बचाने में मदद करते हैं।

खेलते समय सावधानियाँ—

बेसबॉल खेलते समय मैदान को पहले अच्छी तरह जाँच लेना चाहिए। खिलाड़ियों को खेल से पहले वार्म-अप और हल्की कसरत करनी चाहिए। बल्लेबाजी के समय आसपास खड़े खिलाड़ियों से उचित दूरी रखनी चाहिए। हेलमेट और अन्य सुरक्षा उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए। बिना प्रशिक्षण के तेज़ गेंदबाजी या कठिन तकनीक का अभ्यास नहीं करना चाहिए। चोट लगने पर खेल जारी रखने के बजाय तुरंत उचित उपचार लेना चाहिए।

बेसबॉल के लाभ—

बेसबॉल खेलने से शरीर में फुर्ती, गति, संतुलन और सहनशक्ति बढ़ती है। इससे हाथ और आँखों के बीच बेहतर तालमेल विकसित होता है। दौड़ने से शरीर सक्रिय रहता है और नियमित खेल से स्वास्थ्य अच्छा बना रहता है। इसके अलावा यह खेल टीम भावना, अनुशासन, सहयोग, नेतृत्व और निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित करता है।

अतः बेसबॉल केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह शारीरिक और मानसिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि इसे उचित नियमों और सावधानियों के साथ खेला जाए, तो यह बच्चों और युवाओं के लिए एक उपयोगी और आनंददायक खेल साबित हो सकता है।



राकेश कुमार चन्देल
सहायक अध्यापक
कम्पोजिट विद्यालय रैपुरवा माफी
क्षेत्र व जनपद — चित्रकूट

योग से लाभ



शिक्षण संवाद

“पतंजलि के संस्थापक के अनुसार जो मन की वृत्तियों पर नियंत्रण करती है वही योग है।”

अधिकांश लोगों के लिए योग केवल तनावपूर्ण समाज में स्वास्थ्य बनाए रखने का मुख्य साधन है, इसके अलावा योग के कई आध्यात्मिक लाभ भी हैं, इनका वर्णन करना आसान नहीं है। क्योंकि यह आपको स्वयं योगाभ्यास करके हासिल और फिर महसूस करने पड़ेंगे। हर व्यक्ति को योग अलग रूप से लाभ पहुँचाता है। तो योग को अवश्य अपनाएं और अपनी मानसिक, भौतिक, आध्यात्मिक और आत्मिक सेहत में सुधार लाएं।

योग सही तरीके से जीने का विज्ञान है और इसीलिए इसे दैनिक जीवन में शामिल किया जाना चाहिए। योग प्राचीन काल से ही हमारी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है, इसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति पूर्ण रूप से निरोगी रह सकता है, इसीलिए आज इसे दुनिया भर में अपनाया जा रहा है, लोगों ने योग के गुणों के बारे में जाना है और इसे व्यायाम और ध्यान के रूप में स्वीकार किया है।

योग के महत्व को दर्शाती हुई प्रस्तुत हैं चंद लाइनें –

रोग मुक्त तन मन चाहो यदि सदा रहे,
योग और प्राणायाम तुम्हें अपनाना है।

देश की ये शान है, हमारी पहचान है,
हमारा अभिमान है, ये गर्व से बताना है।

शुरुआत दिन की हो सूर्य नमस्कार से,
आसन के लाभ भी सभी को समझाना है।

योग से ही सारे रोग सदा को ही भाग जाए,
ऐसी दिनचर्या को सभी को अपनाना है।



श्रीमती रश्मि शुक्ला

सहायक अध्यापक

कम्पोजिट विद्यालय बेथर

उन्नाव

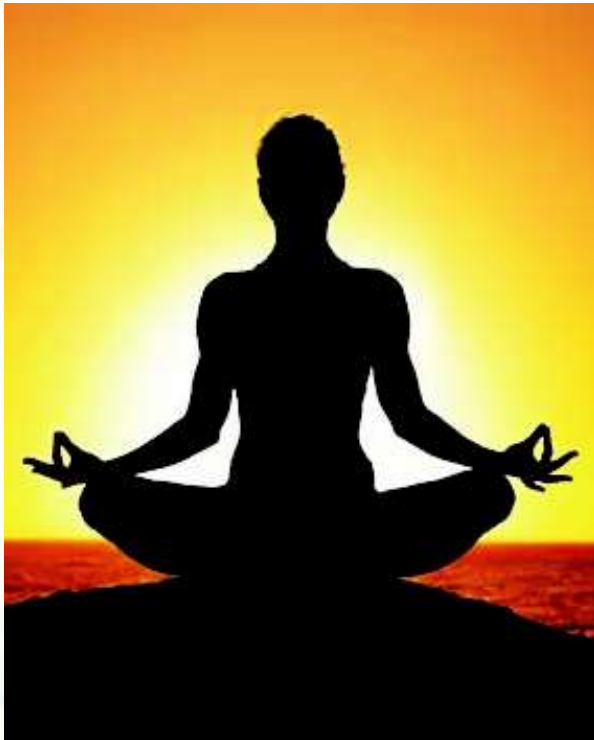
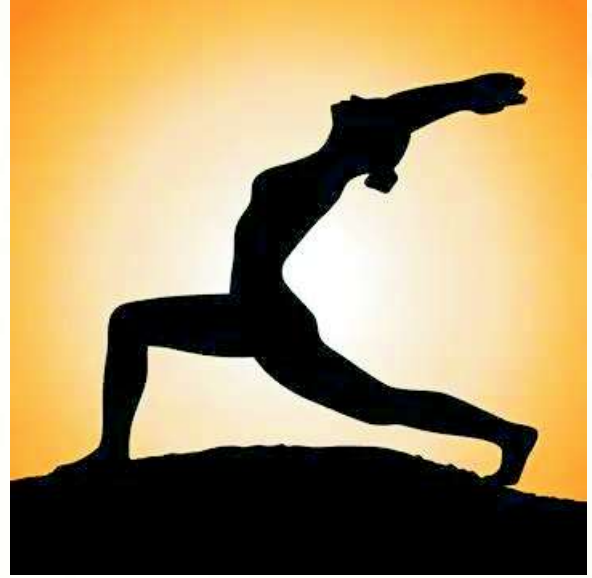
करें योग, रहें निरोग



शिक्षण संवाद

योग करें हम रोज सवेरे,
तन-मन को रखें स्वस्थ घनेरे।
आसन करें, प्राणायाम करें,
जीवन में खुशियों के धाम भरें।

योग हमें अनुशासन सिखलाता,
तन में नई स्फूर्ति जगाता।
मन को रखता शांत और निर्मल,
दूर करे चिंता, बनाए सरल।



सूर्य नमस्कार करें मुस्काकर,
आलस्य को दें दूर भगाकर।
ध्यान लगाएँ शांत मन से,
आगे बढ़ें अच्छे कर्मों से।

इक्कीस जून का दिन है प्यारा,
योग दिवस का संदेश न्यारा।
योग अपनाएँ, स्वस्थ रहें,
खुशियों से अपना जीवन भरें।

रविन्द्र कुमार पटेल (स. अ.)

पी.एम.श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय झौआ
वि.ख.- औराई, जनपद - भदोही

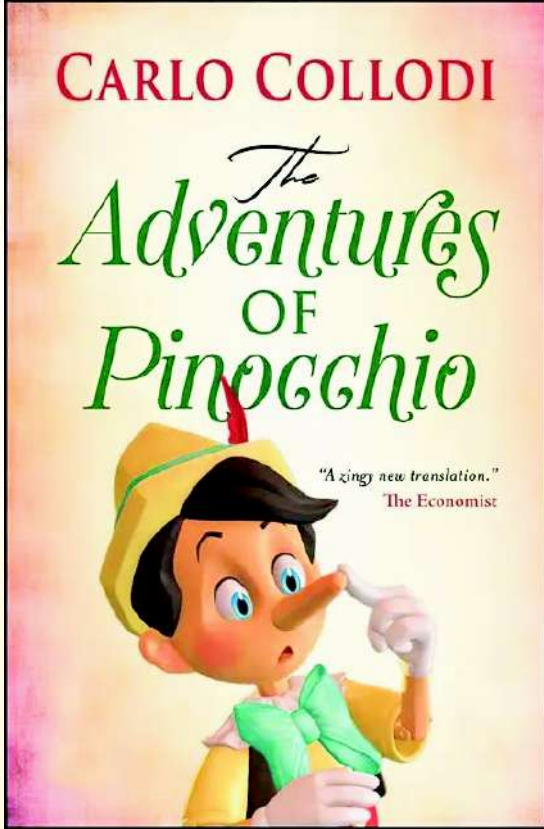


पिनोकियो

शरारत से सीख तक की रोमांचक यात्रा



शिक्षण संवाद



पिनोकियो विश्व प्रसिद्ध बाल साहित्य की एक लोकप्रिय कहानी है, जिसके रचयिता इटली के लेखक कार्लो कोलोडी हैं। इसका मूल नाम The Adventures of Pinocchio है। यह कहानी एक लकड़ी के कठपुतले पिनोकियो की है, जिसे बड़ई जेपेट्टो बनाता है। पिनोकियो की सबसे बड़ी इच्छा एक वास्तविक बालक बनने की होती है।

पिनोकियो बहुत जिज्ञासु, चंचल और शरारती है। वह कई बार बिना सोचे-समझे ग़लत निर्णय लेता है और झूठ बोलता है। कहानी में प्रसिद्ध प्रसंग है कि झूठ बोलने पर उसकी नाक लंबी हो जाती है। यह प्रसंग बच्चों को सत्य बोलने की महत्ता समझाता है।

पिनोकियो की यात्रा में उसे अनेक कठिनाइयों और प्रलोभनों का सामना करना पड़ता है। इन अनुभवों से वह धीरे-धीरे समझता है कि ईमानदारी, आज्ञाकारिता, परिश्रम, ज़िम्मेदारी और दूसरों के प्रति प्रेम जीवन में बहुत महत्वपूर्ण हैं। अंततः अपने पिता जेपेट्टो के प्रति प्रेम और ज़िम्मेदारी का परिचय देकर वह अपने व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाता है।

पिनोकियो केवल मनोरंजन की कहानी नहीं, बल्कि बच्चों को जीवन-मूल्यों की शिक्षा देने वाला महत्वपूर्ण बाल साहित्य है। इसकी रोचक घटनाएँ, कल्पनाशील पात्र और नैतिक संदेश बच्चों की कल्पनाशक्ति को विकसित करते हैं तथा उन्हें सही और ग़लत के बीच अंतर समझने में सहायता करते हैं।

बबलू सोनी

सहायक शिक्षक

प्राथमिक विद्यालय उत्तरार

बाबागंज-प्रतापगढ़



सैनिक कैलाश

शिक्षण संवाद

कैलाश कक्षा 5 का एक लड़का था। उसे अपने देश से बहुत प्यार था। वह रोज़ सुबह स्कूल में प्रार्थना के समय तिरंगे को सलाम करता था। उसे सैनिकों की कहानियाँ सुनना बहुत अच्छा लगता था।

एक दिन स्कूल में सैनिकों पर निबंध प्रतियोगिता हुई। कैलाश ने सैनिकों के बारे में बहुत सुंदर बातें लिखीं। उसने लिखा कि सैनिक दिन-रात हमारी रक्षा करते हैं। वे गर्मी, सर्दी और बारिश की परवाह नहीं करते। वे हमेशा देश की सेवा करते हैं।

उस रात कैलाश ने एक सपना देखा। उसने देखा कि वह बड़ा होकर सैनिक बन गया है। वह सीमा पर खड़ा होकर देश की रक्षा कर रहा है। तभी कुछ दुश्मन सीमा की ओर आने लगे। कैलाश और उसके साथी सैनिकों ने बहादुरी से उनका सामना किया। दुश्मन वापस भाग गए और देश सुरक्षित हो गया।

सुबह जब कैलाश की आँख खुली तो वह बहुत खुश था। उसने अपनी माँ से कहा, "मैं बड़ा होकर सैनिक बनूँगा और अपने देश की रक्षा करूँगा।"

माँ ने मुस्कुराकर कहा, "बेटा, देश की सेवा करने के लिए पहले अच्छी पढ़ाई करनी होगी और एक अच्छा इंसान बनना होगा।"

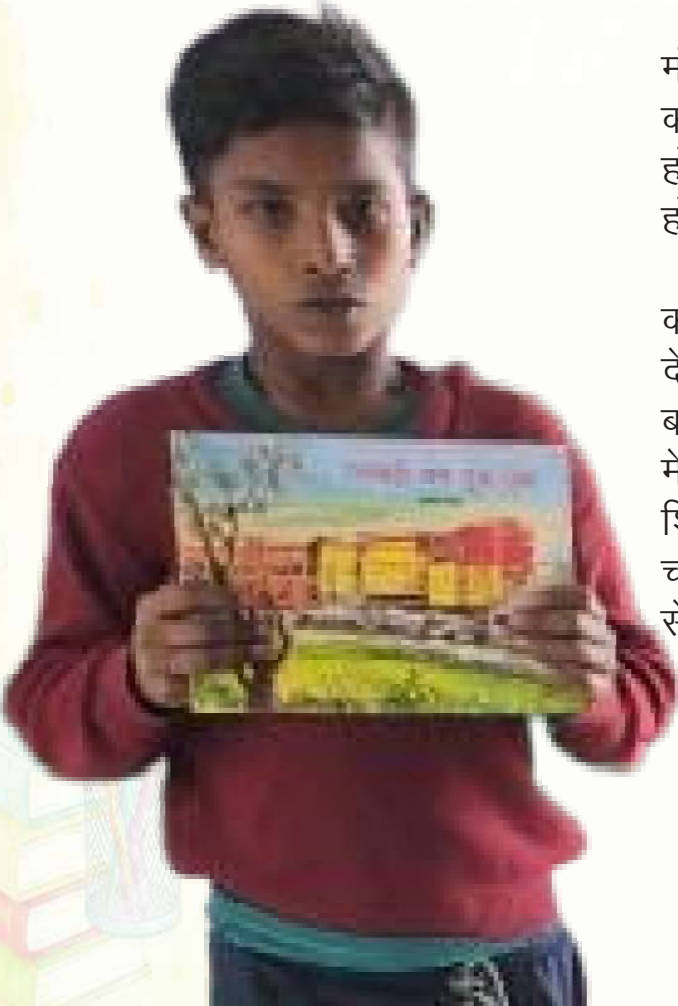
कैलाश ने मन लगाकर पढ़ाई करने का निश्चय किया। वह समझ गया कि देशभक्ति केवल सैनिक बनने में नहीं है, बल्कि अपने काम को ईमानदारी से करने में भी है।

शिक्षा— हमें अपने देश से प्रेम करना चाहिए और अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से निभाना चाहिए।

साभार, कहानी लेखन—

कैलाश (कक्षा-5)

प्रा.वि.जानकीपुर, सिराथू—कौशांबी
मार्गदर्शिका—डा.शालिनी सिंह, स.अ.



मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमर:— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—**9458278429** पर सम्पर्क कर सकते हैं।



1. फेसबुक पेज: <http://m.facebook.com/shikshansamvad/>
2. फेसबुक समूह: <http://www.facebook.com/groups/118010865464649>
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग: <https://www.shikshansamvad.blogspot.in>
4. Twitter@shikshansamvad): <https://twitter.com/shikshansamvad>
5. यू-ट्यूब: <https://www.youtube.com/@shikshansamvad>
6. व्हाट्सएप्प नं० : **9458278429**
7. ई मेल: shikshansamvad@gmail.com
8. वेबसाइट: www.missionshikshansamvad.com



विमल कुमार

टीम मिशन शिक्षण संवाद

‘शिक्षण संवाद’ अप्रैल 2026